

53. और मैं अपने नफ़्सीकी बराअत (का दा'वा) नहीं करता, बेशक नफ़्स तो बुराईका बहुत ही हुक्म देनेवाला है सिवाए उसके जिस पर मेरा रब रहम फ़रमा दे। बेशक मेरा रब बड़ा बख़्शानेवाला निहायत महरबान है।

54. और बादशाहने कहा : उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें अपने लिए (मुशीरे) ख़ास कर लूं, सो जब बादशाहने आपसे (बिल मुशाफ़ा) गफ़्तगू की (तो निहायत मु-त-अस्सिर हुवा और) केहने लगा : (ऐ यूसुफ़!) बेशक आप आजसे हमारे हां मुक्तरदर (और) मो'तमद हैं (या'नी आपको इक्तरदार में शरीक कर लिया गया है)।

55. यूसुफ़ (ﷺ) ने फ़रमाया : (अगर तुमने वाकई मुझसे कोई ख़ास काम लेना है तो) मुझे सरज़मीने (मिस्र) के खज़ानों पर (वज़ीर और अमीन) मुकरर कर दो, बेशक मैं (उनकी) ख़ूब हिफ़ाज़त करने वाला (और इक्तरसादी उमूर का) ख़ूब जाननेवाला हूं।

56. और इस तरह हमने यूसुफ़ (ﷺ) को मुल्के (मिस्र) में इक्तरदार बख़्शा (ताकि) उसमें जहां चाहें रहें। हम जिसे चाहते हैं अपनी रहमतसे सरफ़राज़ फ़रमाते हैं और नेक़ुकारों का अज़्र जाए' नहीं करते।

57. और यकीनन आख़िरत का अज़्र उन लोगों के लिए बेहतर है जो ईमान लाए और रविशे तक्वा पर गामज़न रहे।

58. और (केहत के ज़माने में) यूसुफ़ (ﷺ) के भाई (ग़ल्ला लेने के लिए मिस्र) आए तो उनके पास हाज़िर हुए पस यूसुफ़ (ﷺ) ने उन्हें पेहचान लिया और वोह उन्हें न पेहचान सके।

وَمَا أْبْرِيْ نَفْسِيْ ۚ إِنَّ النَّفْسَ  
لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوْءِ ۗ إِلَّا مَا رَحِمَ  
رَبِّيْ ۗ إِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾  
وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِيْ بِهٖ ۖ اسْتَخْلَصْهُ  
لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ  
الْيَوْمَ لَمَدِيْنًا مَّكِيْنٌ أَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾

قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلَى خَزَائِنِ  
الْأَرْضِ ۚ إِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي  
الْاَرْضِ ۚ يَتَّبِعُوْا مِنْهَا حَيْثُ  
يَشَآءُ ۗ نُّصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ  
وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾  
وَلَا جُرْ اِلْاٰخِرَةَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ  
اٰمَنُوْا وَاكٰنُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾  
وَجَآءَ اِخُوْتُهُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ  
فَعَرَفْتَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُكْرُوْنٌ ﴿٥٨﴾

59. और जब यूसुफ (ﷺ) ने उनका सामान (ज़ादो मताअ) उन्हें मुहय्या कर दिया (तो) फ़रमाया : अपने पिदरी भाई (बिन यामीन) को मेरे पास ले आओ, क्या तुम नहीं देखते कि मैं (किस क़दर) पूरा नापता हूँ और मैं बेहतरीन मेह्वान नवाज़ (भी) हूँ।

60. पस अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो (आइन्दह) तुम्हारे लिए मेरे पास (ग़ल्ले का) कोई पैमाना न होगा और न (ही) तुम मेरे क़रीब आ सकोगे।

61. वोह बोले : हम उसके भेजनेसे मु-त-अल्लिक़ उसके बाप से ज़रूर तकाज़ा करेंगे और हम यकीनन (ऐसा) करेंगे।

62. और यूसुफ़ (ﷺ) ने अपने गुलामों से फ़रमाया : उनकी रक़म (जो उन्होंने ग़ल्ले के इवज़ अदा की थी वापस) उनकी बोरियों में रख दो ताकि जब वोह अपने घरवालों की तरफ़ लौटें तो उसे पेहचान लें (कि यह रक़म तो वापस आ गई है) शायद वोह (उसी सबब से) लौट कर आ जाएं।

63. सो जब वोह अपने वालिद की तरफ़ लौटे (तो) केहने लगे : ऐ हमारे बाप ! (आइन्दह के लिए) हम पर ग़ल्ला बंद कर दिया गया है (सिवाए इसके कि बिन यामीन हमारे साथ जाए) पस हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ भेज दें (ताकि) हम (मज़ीद) ग़ल्ला ले आएँ और हम यकीनन उसके मुहाफ़िज़ होंगे।

64. या'कूब (ﷺ) ने फ़रमाया : क्या मैं इसके बारे में (भी) तुम पर उसी तरह ऐ'तिमाद कर लूँ जैसे इससे क़ब्ल मैंने इसके भाई (यूसुफ़ ﷺ) के बारे में तुम पर ऐ'तिमाद कर लिया था? तो अल्लाह ही बेहतर हिफ़ाज़त फ़रमानेवाला है और वोही सब महरबानों से ज़ियादह महरबान है।

وَلَسَا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالِ  
اَسْتُوْنِي بِاَخِي لَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِيْكُمْ اَلَا  
تَرَوْنَ اَنِّيْ اُوْفِي الْكَيْلِ وَاَنَا خَيْرُ  
الْمُنْزِلِيْنَ ٥٩

فَاِنْ لَّمْ تَأْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ  
عِنْدِيْ وَلَا تَقْرُبُوْنِ ٦٠

قَالُوْا سَنُرٰوِدُ عَنْهُ اٰبَاہٖ وَاِنَّا  
لَفٰعِلُوْنَ ٦١

وَقَالَ لِغُلٰمِيْہٖ اجْعَلُوْا اِصٰعَتَهُمْ فِيْ  
رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يٰعْرِفُوْنَهَا اِذَا  
اِنْقَلَبُوْا اِلٰى اٰهْلِہٖمْ لَعَلَّهُمْ  
يٰرْجِعُوْنَ ٦٢

فَاٰتٰرَجَعُوْا اِلٰى اٰبِيْہٖمْ قَالُوْا يَا بٰنَا  
مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاٰرْسِلْ مَعَنَا  
اَخٰنًا نَّكْتُلْ وَاِنَّا لَهٗ لٰخٰفِطُوْنَ ٦٣

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَا  
اٰمَنُكُمْ عَلٰى اَخِيْہٖ مِنْ قَبْلُ ۗ قَالَہٗ  
خَيْرٌ حٰفِظًا ۗ وَہُوَ اَرْحَمُ الرَّحِيْمِيْنَ ٦٤

65. जब उन्होंने अपना सामान खोला (तो उसमें) अपनी रकम पाई (जो) उन्हें लौटा दी गई थी, वोह केहने लगे : ऐ हमारे वालिदे गिरामी ! हमें और क्या चाहिए? येह हमारी रकम (भी) हमारी तरफ लौटा दी गई है और (अब तो) हम अपने घरवालों के लिए (ज़रूर ही) ग़ल्ल लाएंगे और हम अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे और एक ऊंट का बोझ और ज़ियादह लाएंगे, और येह (ग़ल्ल जो हम पहले लाए हैं) थोड़ी मिक्दार (में) है।

66. या'कूब (ﷺ) ने फ़रमाया : मैं इसे हरगिज़ तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा यहां तक कि तुम अल्लाह की क़सम खा कर मुझे पुख़्ता वा'दा दो कि तुम इसे ज़रूर मेरे पास (वापस) ले आओगे सिवाए इसके कि तुम (सबको कहीं) घेर लिया जाए (या हलाक कर दिया जाए), फिर जब उन्होंने ने या'कूब (ﷺ) को अपना पुख़्ता अ़हद दे दिया तो या'कूब (ﷺ) ने फ़रमाया जो कुछ हम केह रहे हैं उस पर अल्लाह निगेहबान है।

67. और फ़रमाया : ऐ मेरे बेटो ! (शहर में) एक दरवाजे से दाख़िल न होना बल्कि मुख़लिफ़ दरवाजों से (तक्सीम हो कर) दाख़िल होना, और मैं तुम्हें अल्लाह (के अम्र) से कुछ नहीं बचा सकता के हुक्मे (तक्दीर) सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए है। मैंने उसी पर भरोसा किया है और भरोसा करनेवालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।

68. और जब वोह (मिस्रमें) दाख़िल हुए जिस तरह उनके बापने उन्हें हुक्म दिया था, वोह (हुक्म) उन्हें अल्लाह (की तक्दीर) से कुछ नहीं बचा सकता था मगर येह या'कूब (ﷺ) के दिल की एक ख़्वाहिश थी जिसे उसने पूरा किया, और (उस ख़्वाहिशो तदबीर को लगव भी न समझना तुम्हें क्या ख़बर) बेशक या'कूब (ﷺ) साहिबे

وَلَبَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا  
بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا  
يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ بِضَاعَتُنَا  
رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَبِيرٌ أَهْلْنَا وَنَحْفُظُ  
أَخَانًا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ذَلِكَ  
كَيْلٌ يَّسِيرٌ ﴿٦٥﴾

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّى  
تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ  
إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا اتَّوَهُ  
مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ  
وَكَيْلٌ ﴿٦٦﴾

وَقَالَ يَبْنَى لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ  
وَاحِدٍ وَاَدْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُتَفَرِّقَةٍ  
وَمَا أَعْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ  
إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ  
وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾

وَلَبَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ  
أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ  
اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ  
يَعْقُوبَ قَضَاهَا وَإِنَّهُ لَكُدُو عِلْمٍ

इल्म थे इस वजह से कि हमने उन्हें इल्मे (खास) से नवाजा था मगर अक्सर लोग (इन हकीकतों को) नहीं जानते।

69- और जब वोह यूसुफ (ﷺ) के पास हाज़िर हुए तो यूसुफ (ﷺ) ने अपने भाई (बिन यामीन) को अपने पास जगह दी (उसे आहिस्ता से) कहा : बेशक मैं ही तेरा भाई (यूसुफ) हूँ पस तू ग़म ज़दह न हो उन कामों पर जो येह करते रहे हैं।

70. फिर जब (यूसुफ (ﷺ) ने) उनका सामान उन्हें मुहय्या कर दिया तो (शाही) प्याला अपने भाई (बिन यामीन)की बोरी में रख दिया बाद अज़ां पुकारनेवाले ने आवाज़ दी : ऐ काफ़लेवालो ! (टेहरो) यकीनन तुम लोग ही चोर (मा'लूम होते)हो।

71. वोह उनकी तरफ़ मु-त-वज्जेह हो कर केहने लगे : तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है?

72. वोह (दरबारी मुलाज़िम)बोले : हमें बादशाह का प्याला नहीं मिल रहा और जो कोई उसे (ढूँढ कर) ले आए उसके लिए एक ऊंट का ग़ल्ला (इन्-आम) है और मैं उसका ज़िम्मेदार हूँ।

73. वोह केहने लगे ! अल्लाह की कसम बेशक तुम जान गए हो(गे) हम इसलिए नहीं आए थे कि (जुर्म का इर्तिक़ाब कर के) ज़मीनमें फ़साद बपा करें और न ही हम चोर हैं।

74. वोह (मुलाज़िम) बोले : (तुम खुद ही बताओ) कि उस (चोर) की क्या सज़ा होगी अगर तुम झूटे निकले?

375. उन्होंने कहा : उसकी सज़ा येह है कि जिसके

لَبَا عَلَيْنَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ  
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوْسَىٰ إِلَيْهِ  
أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا  
تَبْتَسِ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ  
السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ  
مُؤَدِّنٌ أَيُّهَا الْعَبِيرُ إِنَّكُمْ  
لَسُرِقُونَ ﴿٧٠﴾

قَالُوا وَاقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا  
تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾

قَالُوا تَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلَسْنَا بِجَاءِ  
بِهِ حُلٍّ بَعِيرٍ وَأَتَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا  
لِنُقْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا  
سُرِقِينَ ﴿٧٣﴾

قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ  
كَذِبِينَ ﴿٧٤﴾

قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ



सामान में से वोह (प्याला) बर आमद हो वोह खुद ही उसका बदला है (या'नी उसीको उसके बदले में रख लिया जाए), हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं।

76. पस यूसुफ (ﷺ) ने अपने भाई की बोरीसे पहले उनकी बोरियोंकी तलाशी शुरू की फिर (बिल आखिर) उस (प्याले) को अपने (सगे) भाई (बिन यामीन) की बोरीसे निकाल लिया। यूं हमने यूसुफ (ﷺ) को तदबीर बताई। वोह अपने भाई को बादशाहे (मिस्र) के क़ानून की रू से (असीर बना कर) नहीं रख सकते थे मगर येह कि (जिसे) अल्लाह चाहे। हम जिसके चाहते हैं दरजात बुलंद कर देते हैं, और हर साहिबे इल्म से ऊपर (भी) एक इल्मवाला होता है।

77. उन्होंने कहा : अगर इसने चोरी की है (तो कोई तअज़्जुब नहीं) बेशक इसका भाई (यूसुफ) भी इससे पहले चोरी कर चुका है, सो यूसुफ (ﷺ) ने येह बात अपने दिलमें (छुपाए) रखी और उसे उन पर ज़ाहिर न किया, (दिल में ही) कहा : तुम्हारा हाल निहायत बुरा है, और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम बयान कर रहे हो।

78. वोह बोले : ऐ अज़ीज़े मिस्र! इसके वालिद बड़े मुअम्मर बुजुर्ग हैं, आप इसकी जगह हम में से किसी को पकड़ लें, बेशक हम आपको एहूसान करनेवालों में पाते हैं।

79. यूसुफ (ﷺ) ने कहा : अल्लाह की पनाह कि हमने जिसके पास अपना सामान पाया उसके सिवा किसी (और) को पकड़ लें तब तो हम ज़ालिमों में से हो जाएंगे।

80. फिर जब वोह यूसुफ (ﷺ) से मायूस हो गए तो

فَهُوَ جَزَاءُ وَءَا ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي  
الظَّالِمِينَ ﴿٤٥﴾

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وَعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ  
اسْتَحْرَجَهَا مِنْ وَعَاءِ أَخِيهِ ۖ  
كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ ۖ مَا كَانَ  
لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ  
يَشَاءَ اللَّهُ ۖ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّنْ  
نَّشَاءُ ۖ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٤٦﴾

قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ  
لَّهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَأَسْرَهَا يُّوسُفُ فِي  
نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ  
أَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا  
تَصِفُونَ ﴿٤٧﴾

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا  
كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ ۗ إِنَّا  
نُرَاكَ مِنَ الْحَسَنِينَ ﴿٤٨﴾

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ  
وَجَدْنَا مَتَاعًا عِنْدَهُ ۖ إِنَّا إِذَا  
لَطْمُونَ ﴿٤٩﴾

فَلَمَّا اسْتَيْسُوا مِنْهُ خَاصُّوا نَجِيًّا ۖ

अलाहिदगी में (बाहम) सरगोशी करने लगे, उनके बड़े (भाई)ने कहा : क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बापने तुमसे अल्लाहकी कसम उठवा कर पुख्ता वा'दा लिया था और इससे पहले तुम यूसुफ के हक्कमें जो ज़ियादतियां कर चुके हो (तुम्हें वोह भी मा'लूम हैं) सो मैं इस सरज़मीन से हरगिज़ नहीं जाऊंगा जब तक मुझे मेरा बाप इजाज़त (न) दे या मेरे लिए अल्लाह कोई फ़ैसला फ़रमा दे, और वोह सब से बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

81. तुम अपने बापकी तरफ़ लौट जाओ फिर (जा कर) कहो : ऐ हमारे बाप ! बेशक आपके बेटेने चोरी की है (इस लिए वोह गिरफ़्तार कर लिया गया) और हमने फ़क़त उसी बातकी गवाही दी थी जिसका हमें इल्म था और हम ग़ैब के निगहबान न थे।

82. और (अगर आपको ऐ'तिबार न आए तो) उस बस्ती (वालों) से पूछ लें जिसमें हम थे और उस काफ़िले (वालों) से (मा'लूम कर लें) जिसमें हम आए हैं, और बेशक हम (अपने कौल में) यकीनन सच्चे हैं।

83. या'कूब (ﷺ)ने फ़रमाया : (ऐसा नहीं) बल्कि तुम्हारे नफ़सोंने येह बात तुम्हारे लिए मरगूब बना दी है, अब सब्र (ही) अच्छा है, क़रीब है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए, बेशक वोह बड़ा इल्मवाला बड़ी हिक़मतवाला है।

84. और या'कूब (ﷺ)ने उनसे मुंह फेर लिया और कहा : हाए अफ़सोस! यूसुफ़ (ﷺ)की जुदाई पर और उनकी आँखें ग़मसे सफ़ेद हो गईं सो वोह ग़मको ज़ब्त किए हुए थे।

85. वोह बोले : अल्लाहकी क़सम आप हमेशा

قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ آبَاكُمْ  
قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ  
وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۚ  
فَكَرْنَا أBRَسَ الْأَرْضِ حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِي  
أَبِي أَوْ يُحْكَمَ اللَّهُ لِي ۚ وَهُوَ خَيْرُ  
الْحَكِيمِينَ ۝۸۰

ارْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا  
إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا  
بِمَا عَلَيْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ  
حَافِظِينَ ۝۸۱

وَسَأَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا  
وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۚ  
وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝۸۲

قَالَ بَلْ سَأَلْتُ لَكُمْ أَنْفُسَكُمْ أَمْرًا ۚ  
فَصَبِّرْ صَبِيرًا ۚ عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ  
يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ  
الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝۸۳

وَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفِي عَلَىٰ  
يُوسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنُهُ مِنَ  
الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ۝۸۴

قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتُوا تَذْكُرُ يُوسُفَ

यूसुफ (ही) को याद करते रहेंगे यहां तक कि आप क़रीबे मर्ग हो जाएंगे या आप वफ़ात पा जाएंगे।

86. उन्होंने फ़रमाया : मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद सिर्फ़ अल्लाह के हज़ूर करता हूँ और मैं अल्लाह की तरफ़ से वोह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

87. ऐ मेरे बेटो ! जाओ (कहीं से) यूसुफ़ (ﷺ) और उसके भाई की ख़बर ले आओ और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से सिर्फ़ वोही लोग मायूस होते हैं जो काफ़िर हैं।

88. सो जब वोह (दोबारह) यूसुफ़ (ﷺ) के पास हाज़िर हुए तो केहने लगे : ऐ अज़ीजे मिस्र ! हम और हमारे घरवालों पर मुसीबत आन पड़ी है (हम शदीद क़हत में मुब्तिला हैं) और हम (येह) थोड़ी सी रक़म ले कर आए हैं सो (उसके बदले) हमें (ग़ल्लेका) पूरा पूरा नाप दे दें और (इसके अलावह) हम पर (कुछ) सदका (भी) कर दें। बेशक अल्लाह ख़ैरात करनेवालों को जज़ा देता है।

89. यूसुफ़ (ﷺ) ने फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या (सुलूक) किया था क्या तुम (उस व़क्त) नादान थे।

90. वोह बोले : क्या वाक़ई तुम ही यूसुफ़ हो? उन्होंने फ़रमाया : (हां) मैं यूसुफ़ हूँ और येह मेरा भाई है बेशक अल्लाहने हम पर एहसान फ़रमाया, यकीनन जो शख़्स अल्लाहसे डरता और सब्र करता है तो बेशक अल्लाह नेकूकारों का अज़्र जाए नहीं करता।

حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ  
الْهَالِكِينَ ﴿٨٥﴾

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى  
اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

يَبْنِي أَذْهَبُ أَقْتَحَسُّوَامِنْ يُّوسُفَ  
وَآخِيهِ وَلَا تَأْيِسُوا مِنْ رُّوحِ اللَّهِ  
إِنَّهُ لَا يَأْيِسُ مِنْ رُّوحِ اللَّهِ إِلَّا  
الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا  
الْعَزِيزُ مَسْنَا وَأَهْلْنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا  
بِبِضَاعَةٍ مُزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ  
وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي  
الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ  
بِيُوسُفَ وَآخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾

قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُّوسُفُ قَالَ  
أَنَا يُّوسُفُ وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ  
عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ  
اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾

91. वोह बोल उठे : अल्लाह की क़सम ! बेशक अल्लाहने आप को हम पर फ़ज़ीलत दी है और यक़ीनन हम ही ख़ताकार थे ।

92. यूसुफ़ (ﷺ) ने फ़रमाया : आजके दिन तुम पर कोई मलामत (और गिरफ़्त) नहीं है, अल्लाह तुम्हें मुआफ़ फ़रमा दे और वोह सब महरबानों से ज़ियादह महरबान है ।

93. मेरा येह क़मीज़ ले जाओ, सो इसे मेरे बापके चेहरे पर डाल देना, वोह बीना हो जाएंगे, और (फिर) अपने सब घरवालों को मेरे पास ले आओ ।

94. और जब काफ़ला (मिस्रसे) रवाना हुवा उनके वालिद (या'क़ूब (ﷺ)) ने (किन्आन में बैठे ही) फ़रमा दिया : बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुशबू पा रहा हूँ अगर तुम मुझे बुढ़ापे के बाइस बेहका हुवा ख़याल न करो ।

95. वोह बोले : अल्लाहकी क़सम यक़ीनन आप अपनी (उसी) पुरानी महब्वत की खुद रफ़्तगी में हैं ।

96. फिर जब खुशख़बरी सुनानेवाला आ पहुंचा उसने वोह क़मीज़ या'क़ूब (ﷺ) के चेहरे पर डाल दिया तो उसी वक़्त उनकी बीनाई लौट आई, या'क़ूब (ﷺ) ने फ़रमाया : क्या मैं तुमसे नहीं केहता था कि बेशक मैं अल्लाह की तरफ़से वोह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानतो ।

97. वोह बोले : ऐ हमारे बाप ! हमारे लिए (अल्लाह से) हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत तलब कीजिए, बेशक हम ही ख़ताकार थे ।

98. या'क़ूब (ﷺ) ने फ़रमाया : मैं अनक़रीब तुम्हारे

قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰتٰرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا  
وَ اِنْ كُنَّا لَخٰطِيۡنَ ﴿٩١﴾

قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ  
يَعْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَ هُوَ اَرْحَمُ  
الرّٰحِمِيۡنَ ﴿٩٢﴾

اِذْهَبُوۡا بِقَمِيۡصِيۡ هٰذَا فَاَلْقُوۡهُ عَلٰى  
وَجْهِ اَبِيۡ يٰٓاَتِ بَصِيۡرًا ۗ وَ اَتُوۡنِيۡ  
بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيۡنَ ﴿٩٣﴾

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيۡرُ قَالَ اَبُوۡهُمۡ اِنِّيۡ  
لَا جِدُ رِيۡحَ يُوسُفَ لَوْ لَا اَنْ  
تُقَدِّدُوۡنَ ﴿٩٤﴾

قَالُوا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيۡ ضَلٰلِكَ  
الْقَدِيۡمِ ﴿٩٥﴾

فَلَمَّا اَنَّ جَاءَ الْبَشِيۡرَ اَلْقَمَهُ عَلٰى  
وَجْهِهٖ فَارْتَدَّتْ بَصِيۡرًا ۗ قَالَ اَلَمْ  
اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيۡ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا  
لَا تَعْلَمُوۡنَ ﴿٩٦﴾

قَالُوا يَا اٰبَانَا اَسْتَغْفِرُ لَنَا ذُنُوۡبَنَا  
اِنَّا كُنَّا خٰطِيۡنَ ﴿٩٧﴾

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيۡ ۗ



लिए अपने रबसे बख्शिश तलब करूंगा, बेशक वोही बड़ा बख्शानेवाला निहायत महरबान है।

99. फिर जब वोह (सब अफरादे खाना) यूसुफ (ﷺ) के पास आए (तो) यूसुफ (ﷺ) ने (शहर से बाहर आ कर हज़ारहा सवारियों, फौजियों और लोगों के हमराह शाही जुलूस की सूरतमें उनका इस्तक़्बाल किया और) अपने मां बापको ता'ज़ीमन अपने करीब जगह दी (या उन्हें अपने गले से लगा लिया) और (खुश आमदीद केहते हुए) फ़रमाया : आप मिस्र में दाख़िल हो जाएं अगर अल्लाहने चाहा (तो) अम्नो अफ़ियत के साथ (यहीं क़ियाम करें)।

100. और यूसुफ (ﷺ) ने अपने वालिदैन को ऊपर तख़्त पर बिठा लिया और वोह (सब) यूसुफ (ﷺ) के लिए सजदे में गिर पड़े, और यूसुफ (ﷺ) ने कहा : ऐ अब्बाजान ! येह मेरे (उस) ख़ाब की ता'बीर है जो (बहुत) पहले आया था (अक्सर मुफ़स्सिरिन के नज़दीक उसे चालीस सालका अर्सा गुज़र गया था) और बेशक मेरे रबने उसे सच कर दिखाया है, और बेशक उसने मुझे पर (बड़ा) एहसान फ़रमाया जब मुझे जेलसे निकाला और आप सबको सेहरा से (यहां) ले आया इसके बाद के शैतानने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फ़साद पैदा कर दिया था, और बेशक मेरा रब जिस चीज़को चाहे (अपनी) तद्बीरसे आसान फ़रमा दे, बेशक वोही ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक़मतवाला है।

101. ऐ मेरे रब ! बेशक तूने मुझे सलतनत अता फ़रमाई और तुने मुझे ख़ाबोंकी ता'बीर के इल्मसे नवाज़ा, ऐ आस्मानों और ज़मीनके पैदा फ़रमानेवाले ! तू दुनियामें (भी) मेरा कारसाज़ है और आख़िरत में (भी)।

إِنَّهُ هُوَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ  
أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مَعِيَ  
إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ﴿٩٩﴾

وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ  
سُجَّدًا وَقَالَ يَا أَبَتِ هَذَا تَأْوِيلُ  
رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي  
حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي  
مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ  
الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ  
بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي إِنَّ رَبِّي  
لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ  
الْحَكِيمُ ﴿١٠٠﴾

رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ  
وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ  
فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ

मुझे हालते इस्लाम पर मौत देना और मुझे सालेह लोगों के साथ मिला दे।

102. (ऐ हबीबे मुकर्रम!) येह (क़िस्सा) ग़ैबकी खबरों में से है, जिसे हम आपकी तरफ़ वही फ़रमा रहे हैं, और आप (कोई) उनके पास मौजूद न थे जब वोह (बिरादराने यूसुफ़) अपनी साज़िशी तदबीर पर जमा' हो रहे थे और वोह मक्रो फ़रेब कर रहे थे।

103. और अक्सर लोग ईमान लानेवाले नहीं हैं अगरचे आप (कितनी ही) ख़्वाहिश करें।

104. और आप उनसे इस (दा'वतो तबलीग़) पर कोई सिला तो नहीं मांगते, येह क़ुरआन जुमला जहानवालों के लिए नसीहत ही तो है।

105. और आस्मानों और ज़मीनमें कितनी ही निशानियां हैं जिन पर उन लोगों का गुज़र होता रेहता है और वोह उनसे सर्फ़े नज़र किए हुए हैं।

106. और उनमें से अक्सर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं रखते मगर येह कि वोह मुशरिक हैं।

107. क्या वोह इस बातसे बे ख़ौफ़ हो गए हैं कि उन पर अल्लाह के अज़ाब की छा जानेवाली आफ़त आ जाए या उन पर अचानक क़ियामत आ जाए और उन्हें ख़बर भी न हो।

108. (ऐ हबीबे मुकर्रम!) फ़रमा दीजिए: येही मेरी राह है। मैं अल्लाहकी तरफ़ बुलाता हूँ, पूरी बसीरत पर (काइम)

وَلِي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفِّي

مُسْلِمًا وَالْحَقِّنِي بِالصَّالِحِينَ ⑩

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ

إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ

اجْتَمَعُوا أَمْرُهُمْ وَهُمْ يَكْفُرُونَ ⑪

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ

بِمُؤْمِنِينَ ⑫

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ٭

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ⑬

وَكَأَيِّن مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ

وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا

مُعْرِضُونَ ⑭

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ

مُشْرِكُونَ ⑮

أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ

عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ

بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑯

قُلْ هَذَا سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ تَعَالَى

عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ٭

हूँ, मैं (भी) और वोह शख्स भी जिसने मेरी इत्तिबाअ की, और अल्लाह पाक है और मैं मुशरिकों में से नहीं हूँ।

109. और हमने आपसे पहले भी (मुख्तलिफ) बस्तियोंवालों में से मर्दों ही को भेजा था जिनकी तरफ हम वही फ़रमाते थे, क्या उन लोगोंने ज़मीन में सैर नहीं की कि वोह (खुद) देख लेते कि उनसे पहले लोगोंका अंजाम क्या हुआ, और बेशक आखिरत का घर परहेज़गारी इख़्तियार करनेवालों के लिए बेहतर है, क्या तुम अक्ल नहीं रखते ?

110. यहां तक कि जब पयग़म्बर (अपनी ना फ़रमान कौमों से) मायूस हो गए और उन मुन्किर कौमों ने गुमान कर लिया कि उनसे झूट बोला गया है (या'नी उन पर कोई अज़ाब नहीं आएगा) तो उन रसूलों को हमारी मदद आ पहुंची फिर हमने जिसे चाहा (उसे) नजात बख़्श दी, और हमारा अज़ाब मुजरिम कौम से फेरा नहीं जाता।

111. बेशक उनके किस्सों में समझदारों के लिए इब्रत है, येह (कुरआन) ऐसा कलाम नहीं जो घड़ लिया जाए बल्कि (येह तो) उन (आस्मानी किताबों) की तस्दीक है जो इससे पहले (नाज़िल हुई) हैं और हर चीज़ की तफ़्सील है और हिदायत है और रहमत है, उस कौमके लिए जो ईमान ले आए।

وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ  
الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا  
رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ  
الْقَرْيَةِ ۚ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ  
فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ  
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ  
لِلَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠٩﴾

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَ  
ظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ  
نَصْرُنَا فَجَمَعْنَا مِنْ شَاءِ ۚ وَلَا يَرُدُّ  
بِأَسْعَافِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾

لَقَدْ كَانَ فِي قَصصِهِمْ عِبْرَةٌ  
لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ مَا كَانَ حَدِيثًا  
يُفْتَرَىٰ وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ  
يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَهُدًى  
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

आयातुहा 43

96 सूतुर अद 13

उकूआतुहा 6

## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमानेवाला है।

1. अलिफ लाम मीम रा (हकीकी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), यह किताबे इलाही की आयतें हैं, और जो कुछ आपके रबकी तरफसे आपकी जानिब नाज़िल किया गया है (वोह) हक़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।
2. और अल्लाह वोह है जिसने आस्मानों को बिगैर सुतुर के (खुलाअ में) बुलंद फरमाया (जैसा कि) तुम देख रहे हो फिर (पूरी काइनात पर मुहीत अपने) तख्ते इक़तदार पर मु-त-मक्किन हुआ और उसने सूरज और चांद को निज़ाम का पाबंद बना दिया। हर एक अपनी मुकर्ररह मीआद (में मुसाफ़त मुकम्मल करने) के लिए (अपने अपने मदारमें) चलता है, वोही (सारी काइनात के) पूरे निज़ाम की तद्बीर फ़रमाता है, (सब) निशानियों (या क़वानीने फ़ितरत) को तफ़सीलन वाज़ेह फ़रमाता है ताकि तुम अपने रबके रूबरू हाज़िर होने का यकीन कर लो।
3. और वोही है जिसने (गोलाई के बावजूद) ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और दरिया बनाए, और हर किस्म के फलों में (भी) उसने दो दो (जिन्सों के) जोड़े बनाए (वोही) रातसे दिन को ढांक लेता है, बेशक उसमें तफ़क़ुर करनेवालों के लिए (बहुत) निशानियां हैं।
4. और ज़मीन में (मुख़ालिफ़ किस्मके) क़त्आत हैं जो एक दूसरे के करीब हैं और अँगूरों के बागात हैं और खेतियां हैं और खज़ूरके दरख़्त हैं, झुंडदार और बिगैर

الَّذِي تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَالَّذِي  
أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَكِنَّ  
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ①

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ  
عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى  
الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ  
كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ① يُدَبِّرُ  
الْأُمُورَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ  
رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ②

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ  
فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ  
الشَّجَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ  
الشَّيْنِ يُعْشَى اللَّيْلَ النَّهَارَ ① إِنَّ فِي  
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ③  
وَ فِي الْأَرْضِ قَطْعٌ مُّتَّجِرَاتٌ وَ  
جَنَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ وَ زُرْعَةٌ وَ نَخِيلٌ



झुंडके, उन (सब) को एक ही पानी से सैराब किया जाता है और (उसके बावजूद) हम जाइके में बा'ज को बा'ज पर फज़ीलत बख़ाते हैं, बेशक उसमें अक्लमंदों के लिए (बड़ी) निशानियां हैं।

5. और अगर आप (कुफ़ार के इन्कार पर) तअज़्जुब करें तो उनका (येह) केहना अज़ीब(तर) है कि क्या जब हम (मर कर) खाक हो जाएंगे तो क्या हम अज सरे नौ तख़लीक़ किए जाएंगे? येही वोह लोग हैं जिन्होंने अपने रबका इन्कार किया, और उनही लोगों की गरदनों में तौक़ (पड़े) होंगे, और येही लोग अहले जहन्नम हैं, वोह उसमें हमेशां रहेनेवाले हैं।

6. और येह लोग रहमतसे पहले आपसे अज़ाब तलब करने में जल्दी करते हैं, हालांकि उनसे पहले कई अज़ाब गुज़र चुके हैं, और (ऐ हबीब!) बेशक आपका रब लोगों के लिए उनके जुल्मके बा वजूद बख़िशाशवाला है और यकीनन आपका रब सख़्त अज़ाब देनेवाला (भी) है।

7. और काफ़िर लोग केहते हैं कि इस (रसूल) पर उनके रबकी तरफ़से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? (ऐ रसूले मुकर्रम!) आप तो फ़क़त (ना फ़रमानों को अंजामे बदसे) डरानेवाले और (दुनिया की) हर क़ौम के लिए हिदायत बहम पहुंचानेवाले हैं।

8. अल्लाह जानता है जो कुछ हर मादा अपने पेट में उठाती है और रहम जिस क़दर सुकड़ते और जिस क़दर बढ़ते हैं, और हर चीज़ उसके हां मुकर्रर हृद के साथ है।

صَوَانٌ وَعَيْرُ صَوَانٍ يُسْقَى بِمَا  
وَاحِدٌ ۖ وَنُقِصَلُ بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ  
فِي الْأَكْلِ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ  
لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣﴾

وَإِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاذَكُنَا  
تُرِبَاءً إِنَّا لَأَعْيَضُنَّ بِرَبِّهِمْ ءَأُولَئِكَ  
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۗ وَأُولَئِكَ  
الْأَعْمَلُ فِي آعْنَاقِهِمْ ۗ وَأُولَئِكَ  
أَصْحَابُ النَّارِ ۗ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥﴾  
وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ  
الْحَسَنَةِ ۚ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ  
السُّنُتُ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ  
لِّلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ ۗ وَإِنَّ رَبَّكَ  
لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَلَا أَنزَلَ  
عَلَيْهِ آيَةً مِنْ رَبِّهِ ۗ إِنَّمَا أَنْتَ  
مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٤﴾

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا  
تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ  
وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِقَدَرٍ ﴿٨﴾

9. वोह हर निहां और अयां को जाननेवाला है सबसे बरतर (और) आ'ला रुत्वेवाला है।

10. तुम में से जो शख्स आहिस्ता बात करे और जो बुलंद आवाजसे करे और जो रात (की तारीकी) में छुपा हो और जो दिन (की रौशनी) में चलता फिरता हो (उसके लिए) सब बराबर हैं।

11. (हर) इन्सान के लिए यके बाद दीगरे आनेवाले (फरिश्ते) हैं जो उसके आगे और उसके पीछे अल्लाहके हुक्मसे उसकी निगेहबानी करते हैं। बेशक अल्लाह किसी कौमकी हालत को नहीं बदलता यहां तक कि वोह लोग अपने आपमें खुद तब्दीली पैदा कर डालें, और जब अल्लाह किसी कौमके साथ (उसकी अपनी बद आ'मालियों की वजह से) अज़ाबका इरादा फरमा लेता है तो उसे कोई टाल नहीं सकता, और न ही उनके लिए अल्लाहके मुकाबले में कोई मददगार होता है।

12. वोही है जो तुम्हें (कभी) डराने और (कभी) उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और (कभी) भारी (घने) बादलों को उठाता है।

13. (बिजलियों और बादलों की) गरज (या उस पर मु-त-अय्यन फरिश्ता) और तमाम फरिश्ते उसके खौफसे उसकी हम्द के साथ तस्बीह करते हैं, और वोह कड़कती बिजलियां भेजता है फिर जिस पर चाहता है उसे गिरा देता है, और वोह (कुफ़ार कुदरतकी इन निशानियों के बावजूद) अल्लाहके बारे में झगड़ा करते हैं, और वोह सख़्त तदबीरो गिरफ़्तवाला है।

14. उसीके लिए हक्क (या'नी तौहीद) की दा'वत है, और वोह (काफ़िर) लोग जो उसके सिवा (मा'बूदाने बातिला या'नी बुतों) की इबादत करते हैं, वोह उन्हें किसी चीज़

عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ  
السُّعَالِ ٩

سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَسَرَ الْقَوْلَ وَ  
مَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ  
بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ١٠

لَهُ مَعْقَبَةٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ  
خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ط  
إِنَّ اللَّهَ لَا يُعَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ  
يُعَيِّرُوا مِمَّا بِنَفْسِهِمْ ط وَإِذَا أَرَادَ  
اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ؕ وَمَا  
لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ مَن وَّالٍ ١١

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَ  
طَمَعًا وَيُنشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ١٢

وَيَسْبِغُ الرِّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ  
مِنْ خِيفَتِهِ ؕ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ  
فَيُصِيبُ بِهَا مَن يَشَاءُ وَهُمْ  
يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ ؕ وَهُوَ شَدِيدُ  
الْمِحَالِ ١٣

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ط وَالَّذِينَ يَدْعُونَ  
مِن دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ

का जवाब भी नहीं दे सकते। उनकी मिसाल तो सिर्फ उस शख्स जैसी है जो अपनी दोनों हथेलियां पानी की तरफ फैलाए (बैठा) हो कि पानी (खुद) उसके मुंह तक पहुंच जाए और (यू तो) वोह (पानी) उस तक पहुंचनेवाला नहीं, और (इसी तरह) काफिरों का (बुतों की इबादत और उनसे) दुआ करना गुमराही में भटकने के सिवा कुछ नहीं।

15. और जो कोई (भी) आस्मानों और ज़मीन में है वोह तो अल्लाह ही के लिए सजदह करता है (बा'ज) खुशी से और (बा'ज) मजबूरन और उनके साए (भी) सुब्हो शाम (उसी को सज्दह करते हैं तो फिर उन काफिरोंने अल्लाह को छोड़ कर बुतों की सज्दह रेज़ी क्यूं शुरुअ कर ली है)।

16. (उन काफिरों के सामने) फ़रमाइए कि आस्मानों और ज़मीन का रब कौन है ? आप (खुद ही) फ़रमा दीजिए : अल्लाह है । (फिर) आप (उनसे दर्याफ़्त) फ़रमाइए : क्या तुमने उसके सिवा (उन बुतों) को कारसाज़ बना लिया है जो न अपनी ज़ातों के लिए किसी नफे' के मालिक हैं और न किसी नुक़सान के। आप फ़रमा दीजिए क्या अंधा और बीना बराबर हो सकते हैं या क्या तारीकियां और रौशनी बराबर हो सकती हैं। क्या उन्होंने अल्लाह के लिए ऐसे शरीक बनाए है जिन्होंने अल्लाहकी मख़्तूक की तरह (कुछ मख़्तूक) खुद (भी) पैदा की हो, सो (उन बुतों की पैदा कर्दह) उस मख़्तूक से उनको तशाबोह (या'नी मुग़ालता) हो गया हो, फ़रमा दीजिए : अल्लाह ही हर चीज़ का ख़ालिक है और वोह एक है, वोह सब पर ग़ालिब है।

17. उसने आस्मानकी जानिबसे पानी उतारा तो वादियां अपनी (अपनी) गुंजाइश के मुताबिक़ बेह निकलीं, फिर सैलाब की रव ने उभरा हुवा झाग उठा लिया, और जिन

إِلَّا كِبَاسِطٌ كَفِيَّهُ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْدُعَ  
فَأَهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ط وَمَا دُعَاءُ  
الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝۱۳

وَاللَّهُ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظَلَمَهُمُ  
بِالْعَدْوِ وَالْإِصَالِ ۝۱۵

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط  
قُلِ اللَّهُ ط قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ  
أَوْلِيَاءَ لَا يَسْتَكُونُ لَأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا  
وَلَا ضَرًّا ط قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَى  
وَالْبَصِيرُ ۗ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَةُ وَ  
النُّورُ ۗ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا  
كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَالِقُ عَلَيْهِمْ ط  
قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ  
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝۱۶

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ  
بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا  
رَابِيًا ط وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ

चीजों को आगमें तपाते हैं, ज़ेवर या दूसरा सामान बनाने के लिए उस पर भी वैसा ही झाग उठता है, इस तरह अल्लाह हक़ और बातिल की मिसालें बयान फ़रमाता है, सो झाग तो (पानीवाला हो या आगवाला सब) बेकार हो कर रेह जाता है और अल्बत्ता जो कुछ लोगों के लिए नफ़ा' बख़्खा होता है वोह ज़मीनमें बाकी रहता है अल्लाह इस तरह मिसालें बयान फ़रमाता है।

18. ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने अपने रबका हुक्म कुबूल किया भलाई है, और जिन्होंने उसका हुक्म कुबूल नहीं किया अगर उनके पास वोह सब कुछ हो जो ज़मीनमें है और उसके साथ उतना और भी हो सो वोह उसे (अज़ाब से नजात के लिए) फ़िदया दे डालें (तब भी) उन्ही लोगों का हिसाब बुरा होगा, और उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वोह निहायत बुरा ठिकाना है।

19. भला वोह शख़्स जो येह जानता है कि जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रबकी जानिब से नाज़िल किया गया है हक़ है, उस शख़्स के मानिन्द हो सकता है जो अँधा है, बात येही है कि नसीहत अक्लमंद ही कुबूल करते हैं।

20. जो लोग अल्लाहके अहद को पूरा करते हैं और कौलो क़रार को नहीं तोड़ते।

21. और जो लोग इन सब (हुकूक़ुल्लाह, हुकूक़ुरसूल, हुकूकुल इबाद और अपने हुकूके क़राबत) को जोड़े रखते हैं, जिनके जोड़े रखनेका अल्लाहने हुक्म फ़रमाया है और अपने रब की ख़शिथ्यत में रेहते हैं और बुरे हिसाब से खाइफ़ रेहते हैं।

ابْتِغَاءَ حَلِيَّةٍ اَوْ مَتَاعٍ رَبِّدْ مِثْلَهُ ط  
كَذٰلِكَ يَصْرِفُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبٰطِلَ ه  
فَاَمَّا الرّبُّدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ؕ وَاَمَّا  
مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ ط  
كَذٰلِكَ يَصْرِفُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ١٧ ط

لِّلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ الْحُسْنٰى ط  
وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ  
لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيعًا مِّثْلَهٗ  
مَعَهٗ لَا فِتْنٰوًا بِهٖ ط اُولٰٓئِكَ لَهُمْ  
سُوْءُ الْحِسَابِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ جَهَنَّمَ  
وَيُسَسُّوْنَ لَهَا ١٨ ع

اَفَمَنْ يَعْلَمُ اَنَّآ اُنزِلَ اِلَيْكَ مِنْ  
رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ط اِنَّمَا  
يَتَذَكَّرُ اُولُو الْاَلْبَابِ ١٩ ل

الَّذِيْنَ يُؤْفِقُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَا لَا  
يُنْقِضُوْنَ الْبَيْثٰقَ ٢٠ ل

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَا اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖ  
اَنْ يُوصَلَ وَا يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ  
وَيَخَافُوْنَ سُوْءَ الْحِسَابِ ٢١ ط



22. और जो लोग अपने रबकी रज़ा ज़ूई के लिए सब्र करते हैं और नमाज़ काइम रखते हैं और जो रिज़क हमने उन्हें दिया है उसमें से पोशीदह और ए'लानिया (दोनों तरह) खर्च करते हैं और नेकीके ज़रीए बुराई को दूर करते रहेते हैं येही वोह लोग हैं जिनके लिए आखिरतका (हसीन) घर है।

23. (जहां) सदा बहार बागात हैं उनमें वोह लोग दाखिल होंगे और उनके आबाओ अजदाद और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से जो भी नेकूकार होगा और फ़रिश्ते उनके पास (जन्नतके) हर दरवाजे से आएंगे।

24. (उन्हें खुश आमदीद केहते और मुबारक बाद देते हुए कहेंगे) तुम पर सलामती हो तुम्हारे सब्र करने के सिले में, पस (अब देखो) आखिरत का घर क्या खूब है।

25. और जो लोग अल्लाहका अहद उसके मज़बूत करने के बाद तोड़ देते हैं और उन तमाम (रिश्तों और हुक्क) को क़ता' कर देते हैं जिनके जोड़े रखने का अल्लाहने हुक्म फ़रमाया है और ज़मीनमें फ़साद अंगेज़ी करते हैं उन्ही लोगों के लिए ला'नत है और उनके लिए बुरा घर है।

26. अल्लाह जिसके लिए चाहता है रिज़क कुशादह फ़रमा देता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है, और वोह (काफ़िर) दुनियाकी ज़िन्दगी से बहुत मसूर हैं, हालांकि दुन्यवी ज़िन्दगी आखिरत के मुक़ाबले में एक हक़ीर मताअ के सिवा कुछ भी नहीं।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِعَاءَ وَجْهِ  
رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا  
رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَأُونَ  
بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى  
الدَّارِ ۙ (٢٢)

جَنَّاتٍ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ  
مِن آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ  
وَالسَّالِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن  
كُلِّ بَابٍ (٢٣)

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ  
عُقْبَى الدَّارِ ۙ (٢٤)

وَالَّذِينَ يَتَّقُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ  
بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ  
اللَّهُ بِهِ أَنْ يُؤْصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي  
الْأَرْضِ لَا أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللِّعَنَةُ وَلَهُمْ  
سُوءُ الدَّارِ ۙ (٢٥)

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ  
وَيَقْدِرُ ۗ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا  
وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا  
مَتَاعٌ ۙ (٢٦)

27. और काफ़िर लोग यह केहते हैं कि इस (रसूल) पर इसके रबकी जानिबसे कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, फ़रमा दीजिए : बेशक अल्लाह जिसे चाहता है (निशानियों के बावजूद) गुमराह ठेहरा देता है और जो उसकी तरफ़ रुजूअ करता है उसे अपनी जानिब रहनुमाई फ़रमा देता है।

28. जो लोग ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह के ज़िक्रसे मुत्मइन होते हैं, जान लो कि अल्लाह ही के ज़िक्रसे दिलों को इत्मीनान नसीब होता है।

29. जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उनके लिए (आख़िरत में) ऐशो मुसरत है और उमदह ठिकाना है।

30. (ऐ हबीब!) इसी तरह हमने आपको ऐसी उम्मत में (रसूल बना कर) भेजा है कि जिससे पहले हकीकत में (सारी) उम्मतें गुज़र चुकी हैं (अब यह सब से आख़िरी उम्मत है) ताकि आप उन पर वोह (किताब) पढ़ कर सुना दें जो हमने आपकी तरफ़ वही की है और वोह रहमान का इन्कार कर रहे हैं, आप फ़रमा दीजिए : वोह मेरा रब है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस पर मैंने भरोसा किया है और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ है।

31. और अगर कोई ऐसा कुरआन होता जिसके ज़रीए पहाड़ चला दिए जाते या उससे ज़मीन फाड़ दी जाती या उसके ज़रीए मुर्दोंसे बात करा दी जाती (तब भी वोह ईमान न लाते), बल्कि सब काम अल्लाहही के इख़्तियारमें हैं, तो क्या ईमानवालों को (येह) मा'लूम नहीं कि अगर अल्लाह चाहता तो सब लोगों को हिदायत फ़रमा देता, और हमेशा काफ़िर लोगों को उनके करतूतों के बाइस कोई (न कोई) मुसीबत पहुंचती रहेगी या उनके घरों (या'नी

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۗ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَىٰ آلِهِ مَنْ آتَابَ ﴿٢٧﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَا بٍ ﴿٢٩﴾

كَذَلِكَ أَرْسَلْنَا فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِيَتْلُوا عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ أَوْ حِينًا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ ۗ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٍ ﴿٣٠﴾

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كَلِمَةٌ بِهِ السَّمْوِيُّ ۗ بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ أَفَلَمْ يَأْيِسْ الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ

बस्तियों) के आसपास उतरती रहेगी यहां तक कि अल्लाह का वा'दए (अज़ाब) आ पहुंचे, बेशक अल्लाह वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

32. और बेशक आपसे क़व्ल (भी) कुफ़ार की जानिबसे) रसूलों के साथ मज़ाक़ किया जाता रहा सो मैंने काफ़िरों को मोहलत दी फिर मैंने उन्हें (अज़ाब की) गिरफ्त में ले लिया, फिर (देखिए) मेरा अज़ाब कैसा था।

33. क्या वोह (अल्लाह) जो हर जान पर उसके आ'माल की निगेहबानी फ़रमा रहा है और (वोह बुत जो काफ़िर) लोगोंने अल्लाहके शरीक बना लिए (एक जैसे हो सकते हैं? हरगिज़ नहीं)। आप फ़रमा दीजिए कि उनके नाम (तो) बताओ। (नादानो!) क्या तुम उस (अल्लाह) को उस चीज़की ख़बर देते हो जिस (के वजूद) को वोह सारी ज़मीन में नहीं जानता या (येह सिर्फ़) ज़ाहिरी बातें ही हैं (जिनका हकीकत से कोई त-अल्लुक़ नहीं) बल्कि (हकीकत येह है कि) काफ़िरों के लिए उनका फ़रेब खुशनुमा बना दिया गया है और वोह (सीधी) राहसे रोक दिए गए हैं, और जिसे अल्लाह गुमराह ठेहरा दे तो उसके लिए कोई हादी नहीं हो सकता।

34. उनके लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में (भी) अज़ाब है और यक़ीनन आख़िरत का अज़ाब ज़ियादह सख़्त है और उन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से कोई बचानेवाला नहीं।

35. उस जन्नतका हाल जिसका परहेज़गारों से वा'दा किया गया है (येह है) कि उसके नीचेसे नेहरें बेह रही हैं, उसका फल भी हमेशा रेहनेवाला है और उसका साया (भी), येह उन लोगों का (हुस्ने) अंजाम है जिन्होंने तक्वा

بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةً أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا  
مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ  
إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۚ ۝۳۱

وَلَقَدْ أَسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ  
فَأْمَلَيْتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ  
أَخَذْتُمُ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝۳۲

أَفَمَن هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا  
كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ ۖ قُلْ  
سَوَّاهُمْ ۖ أَمْ تُشْتَبِهُنَّ بِمَا لَا يَعْلَمُونَ  
فِي الْأَرْضِ أَمْ يَبْظَاهِرُونَ مِنَ الْقَوْلِ ۖ  
بَلْ زَيْنٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرَهُمْ وَ  
صُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَمَن يُضِلِّ  
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ۝۳۳

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ  
لِعَذَابِ الْآخِرَةِ أَشَقُّ ۗ وَمَا لَهُمْ  
مِّنَ اللَّهِ مِن وَّاقٍ ۝۳۴

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ ۖ  
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ أُكُلُهَا  
دَائِمٌ وَظِلُّهَا ۖ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ

इख़्तियार किया, और काफ़िरों का अंजाम आतिशे दोज़ख़ है।

36. और जिन लोगों को हम किताब (तौरात) दे चुके हैं (अगर वोह सहीह मोमिन हैं तो) वोह इस (कुआन) से खुश होते हैं जो आपकी तरफ़ नाज़िल किया गया है और उन (ही के) फ़िरकों में से बा'ज़ ऐसे भी हैं जो इसके कुछ हिस्से का इन्कार करते हैं, फ़रमा दीजिए कि बस मुझे तो येही हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और उसके साथ (किसी को) शरीक न ठेहराऊं, उसी की तरफ़ मैं बुलाता हूं और उसी की तरफ़ मुझे लौट कर जाना है।

37. और इसी तरह हमने इस (कुआन) को हुक्म बना कर अरबी ज़बानमें उतारा है, और (ऐ सुननेवाले!) अगर तूने उन (काफ़िरों) की ख़्वाहिशात की पैरवी की इसके बाद कि तेरे पास (क़तई) इल्म आ चुका है तो तेरे लिए अल्लाह के मुक़ाबले में न कोई मददगार होगा और न कोई मुहाफ़िज़।

38. और (ऐ रसूल!) बेशक हमने आपसे पहले (बहुतसे) पयग़म्बरों को भेजा और हमने उनके लिए बीवियां (भी) बनाई और औलाद (भी), और किसी रसूल का येह काम नहीं कि वोह निशानी ले आए मगर अल्लाहके हुक्मसे, हर एक मीआद के लिए एक नविश्ता है।

39. अल्लाह जिस (लिखे हुए) को चाहता है मिटा देता है और (जिसे चाहता है) सब्ब फ़रमा देता है, और उसीके पास अस्ल किताब (लौहे महफूज़) है।

40. और अगर हम (उस अज़ाबका) कुछ हिस्सा जिसका हमने उन (काफ़िरों) से वा'दा किया है आपको (हयाते ज़ाहिरी में ही) दिखा दें या हम आपको (इससे क़ब्ल) उठा

اتَّقُوا اللَّهَ وَعُقِبِ الْكُفْرَيْنِ النَّارُ ۝<sup>٣٥</sup>  
وَالَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ  
بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ  
مَنْ يُعَكِّرُ بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا  
أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ  
بِهِ ۝<sup>٣٦</sup> إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابِ

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا  
وَلَّذِينَ اتَّبَعَتْ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا  
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۝<sup>٣٧</sup> مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ  
مِنْ وَّلِيٍّ وَلَا وَاكِ ۝<sup>٣٨</sup>

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ  
وَجَعَلْنَا لَهُمْ آزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۝<sup>٣٩</sup> وَمَا  
كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا  
بِإِذْنِ اللَّهِ ۝<sup>٤٠</sup> لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۝<sup>٣٨</sup>  
يَسْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ  
وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ۝<sup>٣٩</sup>

وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي  
نَعْدُهُمْ أَوْ تَتَوَقَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ



लें (येह दोनों चीजें हमारी मर्जी पर मुन्हसिर हैं) आप पर तो सिर्फ (अहकाम के पहुंचा देने की जिम्मेदारी है और हिसाब लेना हमारा काम है।

الْبَدْعُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٣٠﴾

41. क्या वोह नहीं देख रहे कि हम (उनके जेरे तसल्लुत) ज़मीन को हर तरफ से घटाते चले जा रहे हैं (और उनके बेश्तर इलाके रफ़ता रफ़ता इस्लाम के ताबे' होते जा रहे हैं), और अल्लाह ही हुक्म फ़रमाता है कोई भी उसके हुक्म को रद्द करनेवाला नहीं, और वोह हिसाब जल्द लेनेवाला है।

أَوْ لَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ  
نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا وَاللَّهُ يَحْكُمُ  
لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۗ وَهُوَ سَرِيعُ  
الْحِسَابِ ﴿٣١﴾

42. और बेशक उन लोगों ने भी मक़्रो फ़रेब किया था जो उनसे पहले हो गुज़रे हैं सो उन सब तदबीरों को तोड़ना (भी) अल्लाह के इरज़ियार में है। वोह ख़ूब जानता है जो कुछ हर शख्स कमा रहा है, और कुफ़ार जल्द ही जान लेंगे कि आख़िरतका घर किसके लिए है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ  
الْمَكْرُ جَبِيعًا ۗ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ  
نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ عُقِبَى  
الدَّارِ ﴿٣٢﴾

43. और काफ़िर लोग केहते हैं कि आप पयग़म्बर नहीं हैं, फ़रमा दीजिए : (मेरी रिसालत पर) मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह बतौरे गवाह काफ़ी है और वोह शख्स भी जिसके पास (सहीह तौर पर आस्मानी) किताब का इल्म है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ  
مُرْسَلًا ۗ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا  
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَمَنْ عِنْدَآ عِلْمُ  
الْكِتَابِ ﴿٣٣﴾

आयातुहा 52

14 सूरतु इब्राही-म मक्कियतुन 72

उकूआतुहा 7

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

1. अलिफ़ लाम रा (हकीकी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह (अज़ीम) किताब है

الرَّحْمٰنُ كَتَبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ  
النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۗ

जिसे हमने आपकी तरफ उतारा है ताकि आप लोगों को (कुफ़र की) तारीकियों से निकाल कर (ईमान के) नूर की जानिब ले आएँ (मजीद येह कि) उनके रबके हुक्म से उसकी राह की तरफ (लाएं) जो गुल्बेवाला सब खूबियोंवाला है।

2. वोह अल्लाह कि जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है (सब) उसीका है, और कुफ़र के लिए सख़्त अज़ाब के बाइस बरबादी है।

3. (येह) वोह लोग हैं जो दुन्यवी ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में ज़ियादह पसंद करते हैं और (लोगों को) अल्लाहकी राह से रोकते हैं और इस (दीने हक्क) में कजी तलाश करते हैं। येह लोग दूर की गुमराही में (पड़ चुके) हैं।

4. और हमने किसी रसूलको नहीं भेजा मगर अपनी क़ौमकी ज़बान के साथ ताकि वोह उनके लिए (पैग़ामे हक्क) ख़ूब वाजेह कर सके, फिर अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह ठेहरा देता है और जिसे चाहता है हिदायत बख़्शता है, और वोह ग़ालिब हिक़मतवाला है।

5. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि (ऐ मूसा!) तुम अपनी क़ौमको अंधेरों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले जाओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ (जो उन पर और पहली उम्मतों पर आ चुके थे)। बेशक उसमें हर ज़ियादह सब्र करनेवाले (और) ख़ूब शुक्र बजा लानेवाले के लिए निशानियाँ हैं।

6. और (वोह वक़्त याद कीजिए) जब मूसा (عليه السلام) ने

يَا ذُن رَابَّهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ  
الْحَمِيدِ ①

اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا  
فِي الْأَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ  
مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ②

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا  
عَلَى الْآخِرَةِ وَ يُصَدِّدُونَ عَنْ  
سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۗ  
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ③

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا  
بِلِسَانٍ تَوْحِيدٍ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۗ فَيُضِلُّ  
اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ  
يَشَاءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ④

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ  
أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى  
النُّورِ ۗ وَذَكَرَهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ ۗ إِنَّ  
فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ⑤

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِذْ كُرُوا

अपनी कौमसे कहा : तुम अपने ऊपर अल्लाहके (उस) इन्आम को याद करो जब उसने तुम्हें आले फिरऔनसे नजात दी जो तुम्हें सख्त अजाब पहुंचाते थे और तुम्हारे लड़कों को ज़ब्त कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रबकी जानिब से बड़ी भारी आजमाइश थी।

7. और (याद करो) जब तुम्हारे रबने आगाह फरमाया कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम पर (ने'मतों में) ज़रूर इजाफ़ा करूंगा और अगर तुम नाशुकी करोगे तो मेरा अजाब यकीनन सख्त है।

8. और मूसा (ﷺ) ने कहा : अगर तुम और वोह सब के सब लोग जो ज़मीन में हैं कुफ़्र करने लगें तो बेशक अल्लाह (उन सबसे) यकीनन बे नियाज़ लाइके हम्दो सना है।

9. क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो तुमसे पहले हो गुजरे हैं, (वोह) कौमे नूह और अ़ाद और समूद (की कौमों के लोग) थे और (कुछ) लोग जो उनके बाद हुए, उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता (क्यों कि वोह सफ़हए हस्ती से बिलकुल नीस्तो नाबूद हो चुके हैं), उनके पास उनके रसूल वाजेह निशानियों के साथ आए थे पस उन्होंने (अज़ राहे तमस्खुरो इनाद) अपने हाथ अपने मूंहों में डाल लिए और (बड़ी ज़सारत के साथ) केहने लगे : हमने उस (दीन) का इन्कार कर दिया जिसके साथ तुम भेजे गए हो और यकीनन हम उस चीज़ की निस्वत इज्तिराब अंगेज़ शक में मुब्तिला हैं जिसकी तरफ़ तुम हमें दा'वत देते हो।

نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ  
الْفِرْعَوْنَ يَسُومُكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ  
وَيُذِخُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ  
نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ  
رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ⑥

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ  
لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ  
عَذَابِي لَشَدِيدٌ ⑦

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَ  
مَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَأِنَّ اللَّهَ  
لَعَنَى حَيْدًا ⑧

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ  
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ  
مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ط  
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا  
أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا  
كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي  
شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ⑨

10. उनके पयगम्बरों ने कहा : क्या अल्लाहके बारे में शक है जो आस्मानों और ज़मीनका पैदा फ़रमानेवाला है, (जो) तुम्हें बुलाता है कि तुम्हारे गुनाहों को तुम्हारी खातिर बख़्शा दे और (तुम्हारी ना फ़रमानियों के बावजूद) तुम्हें एक मुकर्रर मीआद तक मोहलत दिए रखता है। वोह (काफ़िर) बोले तुम तो सिर्फ़ हमारे जैसे बशर ही हो, तुम येह चाहते हो कि हमें उन (बुतों) से रोक दो जिनकी परस्तिश हमारे बापदादा किया करते थे, सो तुम हमारे पास कोई रौशन दलील लाओ।

11. उनके रसूलोंने उनसे कहा : अगरचे हम (नफ़से बशरियत में) तुम्हारी तरह इन्सान ही हैं लेकिन (इस फ़र्क पर भी गौर करो कि) अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है एहसान फ़रमाता है (फिर बराबरी कैसी ?), और (रेह गई रौशन दलील की बात) येह हमारा काम नहीं कि हम अल्लाहके हुक्म के बिगैर तुम्हारे पास कोई दलील ले आएँ, और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिए।

12. और हमें क्या है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें दर आं हाली कि उसीने हमें (हिदायतो कामयाबी की) राहें दिखाई हैं, और हम ज़रूर तुम्हारी अज़ियत रसानियों पर सब करेंगे, और अहले तवक्कल को अल्लाह ही पर तवक्कल करना चाहिए।

13. और काफ़िर लोग अपने पयगम्बरों से केहने लगे : हम बहर सूरत तुम्हें अपने मुल्क से निकाल देंगे या तुम्हें ज़रूर हमारे मज़हब में लौट आना होगा, तो उनके रबने उनकी तरफ़ वही भेजी कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ  
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ  
لِيَغْفِرَ لَكُمْ ۖ مَنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ  
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ قَالُوا إِنْ أَنْتُمْ  
إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ تُرِيدُونَ أَنْ  
تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا  
فَأَنْتُمْ بِسُلْطَانٍ مُّبِينِينَ ⑩

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا  
بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ  
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ  
نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ  
وَعَلَى اللَّهِ فَعَلَيْتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑪

وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ  
هَدَانَا سُبُلَنَا ۖ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا  
أُدِّيْتُمُونَا ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَعَلَيْتَوَكَّلِ  
الْمُتَوَكِّلُونَ ⑫

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ  
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوذُنَّ  
فِي مَلْتِنَا ۖ فَآوَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ  
لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ⑬



14. और उनके बाद हम तुम्हें ज़रूर (उसी) मुल्क में आबाद फ़रमाएंगे। यह (वा'दा) हर उस शख्स के लिए है जो मेरे हुजूर खड़ा होने से डरा और मेरे वा'दए (अज़ाब) से खाइफ़ हुआ।

وَلَسْكَدْنَاكُمْ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۗ  
ذَلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ  
وَعَيْدِي ۝۱۴

15. और (बिल आखिर) रसूलोंने (अल्लाहसे) फ़तह मांगी और हर सरकश जिद्दी ना मुराद हो गया।

وَأَسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ  
عَنِيبٍ ۝۱۵

16. उस (बरबादी) के पीछे (फिर) जहन्नम है और उसे पीपका पानी पिलाया जाएगा।

مِنْ وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ  
مَاءٍ صَدِيدٍ ۝۱۶

17. जिसे वोह ब मुशकिल एक एक घूंट पीएगा और उसे हलक से नीचे उतार न सकेगा, और उसे हर तरफ़से मौत आ घेरेगी और वोह मर (भी) न सकेगा, और (फिर) उसके पीछे (एक और) बड़ा ही सख़्त अज़ाब होगा।

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ  
وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا  
هُوَ بِمَيِّتٍ ۗ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ  
غَلِيظٌ ۝۱۷

18. जिन लोगों ने अपने रबसे कुफ़्र किया है, उनकी मिसाल यह है कि उनके आ'माल (उस) राख की मानिन्द हैं जिस पर तेज़ आंधी के दिन सख़्त हवाका झोंका आ गया, वोह उन (आ'माल) में से जो उन्होंने कमाए थे किसी चीज़ पर काबू नहीं पा सकेंगे। येही बहुत दूर की गुमराही है।

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ  
كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي  
يَوْمٍ عَاصِفٍ ۗ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا  
كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۗ ذَلِكَ هُوَ الصَّلٰۤءُ  
الْبَعِيدُ ۝۱۸

19. (ऐ सुननेवाले!) क्या तूने नहीं देखा कि बेशक अल्लाहने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (पर मन्वी हिक्मत) के साथ पैदा फ़रमाया। अगर वोह चाहे (तो) तुम्हें नीस्तो नाबूद फ़रमा दे और (तुम्हारी जगह) नई मख़्लूक ले आए।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ إِنَّ يَشَآءُ يَدْهَبِكُمْ  
وَيَأْتِي بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝۱۹  
وَمَا ذَلِكْ عَلَىٰ اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝۲۰

20. और यह (काम) अल्लाह पर (कुछ भी) दुश्चर नहीं है।

21. और (रोजे महशर) अल्लाहके सामने सब (छोटे बड़े) हाज़िर होंगे तो (पैरवी करनेवाले) कमज़ोर लोग (ताक़तवर) मु-त-कब्बिरो से कहेंगे : हम तो (उम्र भर) तुम्हारे ताबे' रहे तो क्या तुम अल्लाह के अज़ाब से भी हमें किसी क़दर बचा सकते हो? वोह (उमरा अपने पीछे लगनेवाले ग़रीबोंसे) कहेंगे : अगर अल्लाह हमें हिदायत करता तो हम तुम्हें भी ज़रूर हिदायत की राह दिखाते (हम खुदभी गुमराह थे सो तुम्हें भी गुमराह करते रहे)। हम पर बराबर है ख़्वाह (आज) हम आहो ज़ारी करें या सब्र करें हमारे लिए कोई राहे फ़रार नहीं है।

22. और शैतान कहेगा जबकि फ़ैसला हो चुकेगा कि बेशक अल्लाहने तुमसे सच्चा वा'दा किया था और मैंने (भी) तुमसे वा'दा किया था, सो मैंने तुमसे वा'दा ख़िलाफ़ी की है, और मुझे (दुनिया में) तुम पर किसी किस्म का ज़ोर नहीं था सिवाए इसके कि मैंने तुम्हें (बातिल की तरफ़) बुलाया सो तुमने (अपने मफ़ादकी ख़ातिर) मेरी दा'वत कुबूल की, अब तुम मुझे मलामत न करो बल्कि (खुद) अपने आपको मलामत करो। न मैं (आज) तुम्हारी फ़रियाद रसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फ़रियाद रसी कर सकते हो। इससे पहले जो तुम मुझे (अल्लाहका) शरीक ठेहराते रहे हो बेशक मैं (आज) उससे इन्कार करता हूँ। यकीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

23. और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वोह जन्नतोंमें दाख़िल किए जाएंगे जिनके नीचे से नेहरें बेह रही हैं (वोह) उनमें अपने रबके हुक्म से हमेशा रहेंगे, (मुलाक़ात के वक़्त) उसमें उन का दुआइया कलिमा "सलाम" होगा।

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ  
لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ  
تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُعْتَدُونَ عَنَّا مِنْ  
عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قَالُوا لَوْ  
هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ۗ سَوَاءٌ  
عَلَيْنَا أَجْرُ عَنَّا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا  
مِنْ مَجْزِيٍّ ۝۲۱

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ  
اللَّهَ وَعَدَّكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ  
فَأَخْلَفْتُكُمْ ۗ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ  
سُلْطَنٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ  
لِي ۗ فَلَا تَكُونُوا لِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ مِمَّا  
أَنَابُوا بِصُرْحِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِبَصِيرِيٍّ ۗ  
إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ  
قَبْلُ ۗ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ  
أَلِيمٌ ۝۲۲

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا  
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا  
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ  
رَبِّهِمْ ۗ تَحِيَّاتٌ فِيهَا سَلَامٌ ۝۲۳

24. क्या आपने नहीं देखा, अल्लाहने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई है कि पाकीज़ा बात उस पाकीज़ा दरख़्त के मानिन्द है जिसकी जड़ (ज़मीन में) मज़बूत है और उसकी शाखें आस्मान में हैं।

25. वोह (दरख़्त) अपने रबके हुक्मसे हर वक़्त फल दे रहा है और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है ताकि वोह नसीहत हासिल करें।

26. और नापाक बातकी मिसाल उस नापाक दरख़्त की सी है जिसे ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए, उसे ज़रा भी फ़रार (व बका) न हो।

27. अल्लाह ईमानवालों को (इस) मज़बूत बात (की बरकत) से दुन्यवी ज़िन्दगी में भी साबित क़दम रखता है और आख़िरत में (भी)। और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह ठेहरा देता है। और अल्लाह जो चाहता है कर डालता है।

28. क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाहकी ने'मते (ईमान) को कुफ़्रसे बदल डाला और उन्होंने अपनी क़ौमको तबाही के घरमें उतार दिया।

29. (वोह) दोज़ख़ है जिसमें झोंके जाएंगे, और वोह बुरा ठिकाना है।

30. और उन्होंने अल्लाह के लिए शरीक बना डाले ताकि वोह (लोगों को) उसकी राह से बेहकाएं। फ़रमा दीजिए : तुम (चंद रोज़ह) फ़ाइदा उठा लो बेशक तुम्हारा अंजाम आग ही की तरफ़ (जाना) है।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا  
كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ  
أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفُرُوعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝۲۴

تُؤْتِي أُكْلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا  
وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ  
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝۲۵

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ  
خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ  
الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝۲۶

يُبَيِّنُ اللَّهُ لَ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ  
الْعَاقِبَةِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ فِي  
الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ  
وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۝۲۷

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ  
اللَّهِ كُفْرًا وَآحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ  
الْبَوَارِ ۝۲۸

جَهَنَّمَ يَصَلُّونَهَا وَبَسَّ الْقَوْمَ  
الْقَرَامُ ۝۲۹

وَ جَعَلُوا لِلَّهِ أَدْدًا لِيُضِلُّوا عَنْ  
سَبِيلِهِ قُلْ تَسْعَوْا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ  
إِلَى النَّارِ ۝۳۰

31. आप मेरे मोमिन बंदोंसे फ़रमा दें कि वोह नमाज़ काइम रखें और जो रिज़्क हमने उन्हें दिया है उस में से पोशीदह और ए'लानिया (हमारी राह में) खर्च करते रहें उस दिन के आनेसे पहले जिस दिनमें न कोई ख़रीदो फ़रोख़्त होगी और न ही कोई (दुन्यावी) दोस्ती (काम आएगी)।

32. अल्लाह वोह है जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और आस्मान की जानिबसे पानी उतारा फिर उस पानी के ज़रीए से तुम्हारे रिज़्क के तौर पर फल पैदा किए, और उसने तुम्हारे लिए कश्तियों को मुसख़्खर कर दिया ताकि उसके हुक्मसे समन्दर में चलती रहें और उसने तुम्हारे लिए दरियाओं को (भी) मुसख़्खर कर दिया।

33. और उसने तुम्हारे फ़ाइदे के लिए सूरज और चांदको (बा काइदह एक निज़ामका) मुतीअ बना दिया जो हमेशा (अपने अपने मदार में) गर्दिश करते रहते हैं, और तुम्हारे (निज़ामे हयातके) लिए रात और दिन को भी (एक निज़ामके) ताबे'कर दिया।

34. और उसने तुम्हें हर वोह चीज़ अता फ़रमा दी जो तुमने उससे मांगी, और अगर तुम अल्लाह की ने'मतोंको शुमार करना चाहो (तो) पूरा शुमार न कर सकोगे। बेशक इन्सान बड़ा ही ज़ालिम बड़ा ही ना शुक्रगुज़ार है।

35. और (याद कीजिए) जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अर्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! इस शहर (मक्का) को जाए अम्न बना दे और मुझे और मेरे बच्चों को इस (बात) से बचा ले कि हम बुतों की परस्तिश करें।

36. ऐ मेरे रब ! उन (बुतों) ने बहुतसे लोगों को गुमराह कर डाला है। पस जिसने मेरी पैरवी की वोह तो मेरा होगा

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا  
الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا  
وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمًا  
لَّا يَبْعُ فِيهِ وَلَا خِلَالًا ﴿٣١﴾

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۗ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۗ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ﴿٣٢﴾

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآبِّينَ ۗ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾

وَاتَّكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِن تَعَدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ إِلَّا صَنَامَ ﴿٣٥﴾

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّن النَّاسِ ۗ فَمَنْ تَبِعْنِي فَإِنَّهُ مِنِّي ۗ



और जिसने मेरी ना फ़रमानी की तो बेशक तू बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

37. ऐ हमारे रब ! बेशक मैंने अपनी औलाद (इस्माईल عليه) को (मक्काकी) बे आबो गयाह वादी में तेरे हुर्मतवाले घरके पास बसा दिया है, ऐ हमारे रब ! ताकि वोह नमाज़ काइम रखें पस तू लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि वोह शौको महब्वत के साथ उनकी तरफ़ माइल रहें और उन्हें (हर तरहके) फलों का रिज़क अता फ़रमा, ताकि वोह शुक्र बजा लाते रहें।

38. ऐ हमारे रब ! बेशक तू वोह (सब कुछ) जानता है जो हम छुपाते हैं और जो हम ज़ाहिर करते हैं, और अल्लाह पर कोई भी चीज़ न ज़मीन में पौशीदह है और न ही आस्मानमें (मुख़्फ़ी है)।

39. सब ता'रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ عليه दो फ़रजन्द) अता फ़रमाए, बेशक मेरा रब दुआ ख़ूब सुननेवाला है।

40. ऐ मेरे रब ! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ पर काइम रखनेवाला बना दे, ऐ हमारे रब ! और तू मेरी दुआ कुबूल फ़रमा ले।

41. ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदैन को (बख़्श दे) ★ और दीगर सब मोमिनों को भी, जिस दिन हिसाब काइम होगा।

وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٦﴾

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي  
بُؤَادٍ غَيْرِ ذِي زُرْعَةٍ عِنْدَ بَيْتِكَ  
الْمَحْرَمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ  
فَأَجْعَلْ أَفِيدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي  
إِلَيْهِمْ وَارزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرَاتِ  
لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا  
نُعْدِنُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ  
شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾  
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى  
الْكِبَرِ إِسْعِيلَ وَاسْحَقَ إِنَّ رَبِّي  
لَسَيِّئُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ  
ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤٠﴾

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ  
وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

★ (यहां हज़रत इब्राहीम عليه के हकीकी वालिद तारिख़ की तरफ़ इशारा है, येह काफ़िरो मुशरिक न थे बल्कि दिने हक़ पर थे, आज़र दर अस्ल आपका चचा था, उसने आप عليه को आप عليه के वालिद की वफ़ात के बाद पाला था, इस लिए उसे उरफ़न बाप कहा गया है, वोह मुशरिक था और आपको उसके लिए दुआए मग़फ़िरतसे रोक दिया गया था जबकि यहां हकीकी वालिदैन के लिए दुआए मग़फ़िरत की जा रही है। येह दुआ अल्लाह

42. और अल्लाह को उन कामों से हरगिज़ बेख़बर न समझना जो ज़ालिम अंजाम दे रहे हैं, बस वोह तो उन (ज़ालिमों) को फ़क़त उस दिन के लिए मोहलत दे रहा है जिसमें (ख़ौफ़ के मारे) आँखें फटी रहे जाएंगी।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا  
يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۗ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ  
لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ۝٣٢

43. वोह लोग (मैदाने हश्र की तरफ़) अपने सर ऊपर उठाए दौड़ते जा रहे होंगे इस हाल में कि उनकी पलकें भी न झपकती होंगी और उनके दिल सकत से खाली हो रहे होंगे।

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا  
يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفْئِدَتُهُمْ  
هَوَاءٌ ۝٣٣

44. और आप लोगों को उस दिनसे डराएं जब उन पर अज़ाब आ पहुंचेगा तो वोह लोग जो जुल्म करते रहे होंगे कहेंगे : ऐ हमारे रब ! हमें थोड़ी देर के लिए मोहलत दे दे कि हम तेरी दा'वतको कुबूल कर लें और रसूलों की पैरवी कर लें। (उनसे कहा जाएगा) कि क्या तुम ही लोग पहले कस्में नहीं खाते रहे कि तुम्हें कभी ज़वाल नहीं आएगा।

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ  
العَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا  
رَبَّنَا أَخْرِنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ  
نُجِبْ دَعْوَتَكَ وَتَتَّبِعِ الرَّسُولَ ۗ  
أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ  
مَا لَكُمْ مِّنْ رَّوَالٍ ۝٣٤

45. और तुम (अपनी बारी पर) उनही लोगोंके (छोड़े हुए) महल्लत में रहेते थे (जिन्होंने अपने अपने दौर में) अपनी जानों पर जुल्म किया था हालांकि तुम पर अयां हो चुका था कि हमने उनके साथ क्या मुआमला किया था और हमने तुम्हारे (फहम के) लिए मिसालें भी बयान की थीं।

وَسَكَنتُمْ فِي مَسْكِنٍ الَّذِينَ ظَلَمُوا  
أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا  
بِهِمْ وَضَرَّ بِنَا لَكُمْ إِلَّا مِثَالًا ۝٣٥

46. और उन्होंने (दौलतो इक्तदार के नशे में बद मस्त हो कर) अपनी तरफ़से बड़ी फरेब कारियां कीं जब कि अल्लाह के पास उनके हर फरेब का तोड़ था, अगरचे उनकी मक्काराना तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी उखड़ जाएं।

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ  
مَكْرُهُمْ ۗ وَإِن كَانَ مَكْرُهُمْ  
لَيَتْرُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝٣٦

तआला को इस क़दर पसंद आई कि उसे उम्मते मुहम्मदी ﷺ की नमाज़ों में भी बरक़रार रख दिया गया।)

47. सो अल्लाहको हरगिज अपने रसूलोंसे वा'दा खिलाफी करनेवाला न समझना! बेशक अल्लाह गालिब, बदला लेनेवाला है।

48. जिस दिन (येह) ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और जुम्ला आस्मान भी बदल दिए जाएंगे और सब लोग अल्लाहके रू बरू हाज़िर होंगे जो एक है सब पर गालिब है।

49. और उस दिन आप मुजरिमों को जन्जीरों में जकड़े हुए देखेंगे।

50. उनके लिबास गंधक (या ऐसे रोगन) के होंगे (जो आगको खूब भड़काता है) और उनके चेहरोंको आग ढांप रही होगी।

51. ताकि अल्लाह हर शख्स को उन (आ'माल) का बदला दे दे जो उसने कमा रखे हैं। बेशक अल्लाह हिसाब में जल्दी फरमानेवाला है।

52. येह (कुर्आन) लोगों के लिए कामिलन पैग़ाम का पहुंचा देना है, ताकि उन्हें उसके ज़रीए डराया जाए और येह कि वोह खूब जान लें कि बस वोही (अल्लाह) मा'बूदे यक्ता है और येह कि दानिशमंद लोग नसीहत हासिल करें।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلَفًا وَعَدِّهِ  
رُسُلَهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٣٤﴾  
يَوْمَ تَبْدُلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ  
وَالسَّمَوَاتِ وَبَرُّوْا لِلَّهِ الْوَاحِدِ  
الْقَهَّارِ ﴿٣٨﴾

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ  
مُقَرَّرِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٣٩﴾  
سَمَائِبُهُمْ مِّنْ قَطْرَانٍ وَتَعْشَى  
وُجُوهُهُمُ النَّارِ ﴿٥٠﴾

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ  
إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾  
هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذِرُوْا بِهِ  
لِيَعْلَمُوْا أَنَّ مَا هُوَ إِلَهُ وَوَاحِدٌ  
وَلِيُنذِرَ كُرْأُوْلُوا الْأَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

आयातुहा 99

15 सूरतुल हिजरि मक्किय्यतुन 54

रुकूआतुहा 6

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रहम फरमानेवाला है

1. अलिफ़ लाम रा (हकीकी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह (बरगुज़ीदह) किताब और रौशन कुर्आन की आयतें हैं।

الرَّكَفِ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ  
مُّبِينٍ ﴿١﴾